Volume-07
Issue-12
December-2020

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]

चित्रा मुद्गल का 'आंवा' और सामाजिक मुद्दे

प्रवीन कुमार

पी.जी.टी, संस्कृत (हरियाणा शिक्षा विभाग)

चित्रा मुद्गल जी ने अपने उपन्यास (आंवा) में कई महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया है। जिनमें मुख्य रूप से नारी का,दलित का तथा श्रमिक वर्ग का शोषण है। 'आंवा' की सबसे बड़ी चिन्ता भूमण्डलीकरण की उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव की है। पिछले 20–25 वर्षों में वैश्वीकरण के दुष्प्रभावों ने भारतीय समाज को अपने शिकंजे में ले लिया है।[1]

आधुनिक हिन्दी कथा–साहित्य की बहुचर्चित लेखिका चित्रा मुद्गल को साल 2018 में प्रतिष्ठित अकाद्मी पुरस्कार से सम्मानित किया गया, चित्रा मुद्गल की पहली कहानी स्त्री–पुरूष सम्बन्धों पर थी, जो 1955 में प्रकाशित हुई। बहुचर्चित उपन्यास (आंवा) के लिए उन्हें व्यास सम्मान से भी नवाजा जा चुका है।[2]

10 दिसम्बर, 1944 को तमिलनाडू की राजधानी चेन्नई में जन्मी और मुम्बई में शिक्षित चित्रा मुद्गल के तेरह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास और तीन बाल उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। चित्रा मुद्गल समाज सेवा के क्षेत्र में भी सक्रिय रही है। वह मुम्बई और दिल्ली की कई स्वंयसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर घरों में काम करने वाली गरीब महिलाओं के उत्थान के लिए सक्रिय रहती है। चित्रा मुद्गल आजकल प्रसार भारती बोर्ड की सदस्य भी हैं।[3]

चित्रा मुद्गल के वृहदाकार उपन्यास (आंवा) में चित्रित विसंगतियों के परिप्रेक्ष्प में वैश्वीकरण देखेगें। (आंवा) का अर्थ है– एक जलती हुई भट्ठी। इस समय समाज रूपी भट्ठी में कौन झुलस रहा है, चित्रा मुद्गल ने इसमें श्रमिक वर्ग, दलित वर्ग और स्त्रियों को रखा है। (आंवा) का मुख्य घटना स्थल है मुम्बई।(आंवा) की कथा के दो क्षेत्र है जिन्हें नमिता के चरित्र की धुरी से बांधा गया है– प्रथम नमिता का व्यक्तित्व संसार है, जिसमें उसकी संघर्ष कथा के साथ संजय कनोई से परवान चढ़ता प्रेम है और दूसरी ओर नमिता का बाह्य कर्म क्षेत्र है जिसमें मजदूर आन्दोलन का चित्रण है।[4]

वैश्वीकरण ने निजीकरण, बाजारवाद और उपभोक्ता को बढ़ावा दिया है। जिसके फलस्वरूप समाज की सोच में बदलाव देखने को मिल रहा है। नारी की स्थिति और छवि तो इससे काफी प्रभावित होती दिखाई पड़ रही है। जब से वैश्वीकरण ने एक ग्लोबल संस्कृति को बढ़ावा देना शुरू किया है, वर्तमान दौर में विकसित देशों की तर्ज पर भारत जैसे विकासशील देश में भी सौन्दर्य और फैशन प्रतियोगिताओं की होड़ दिखाई पड़ रही है। बाजारवादी ताकतों ने इन प्रतियोगिताओं के बारे में नारी–क्षमताओं को उजागर करने के तर्क गढ़कर नारी देह प्रदर्शन पर बल दिया है।[5]

वैश्वीकरण ने विकास और सुधार की तुलना में नारी का पतन ही किया है। वैश्वीकरण का यह भयावह रूप लेखिका ने नमिता–संजय कनोई के माध्यम से स्पष्ट किया है। नमिता के विश्वास दिलाने पर भी संजय इसे मानने को तैयार नहीं होता कि नमिता ने जानबूझकर गर्भ नहीं गिराया है। आवेश में आकर संजय सारा सच उगल देता है। "जानती हो बाप बनने के लिए मैंने तुम पर कितना पैसा खर्च किया है"। उसका जिम्मा सिर्फ इतना था कि वह मेरे बाप बनने में मेरी मदद करे।[6]

अब वास्तविकता का विकराल रूप नमिता के सामने खड़ा हुआ है। संजय के लिए यह केवल उपभोग की वस्तु मात्र है। पारिवारिक सम्बन्ध इतने अनुदार, मतलबी और अर्थकेन्द्रित हो गए है, यह कभी सोचा भी नहीं था। मनुष्य का नैसर्गिक स्वभाव ही लुप्तप्राय हो गया है।[7]

मजदूरों की चालों में एक और सच है,मिल में होने वाली हड़ताल। मजदूर यूनियन विभिन्न रूपों में अपनी सत्ता बनाए रखने का घिनौना खेल खेलती है। अन्ना साहब, पवार, शिंदे, गिमला बेन, आघाड़ी कार्यालय के कितने ही कार्यकर्ताओं के माध्यम से मजदूरी राजनीति के सच को उखाड़ा गया है।[8]

यूनियनों के नेता जब राजनीतिक दलों द्वारा एम.एल.ए और एम.पी रूप में स्थापित कर दिए जाते है, तो उन्हीं के समान आचरण करते है और उन्हीं की बोली–बोलने लग जाते हैं। पवार का यह वक्त्व,–'सोचो, श्रमिक संगठन का दहाड़ता बाघ लोकसभा में पहुंच भीगी बिल्ली क्यों हो गया? जिसकी एक दहाड़ मालिकों की पेंट ढीली करती थी–साला अपनी ढ़ीली करवा रहा है।[9]

दलित समस्या पर विचार किया गया है कि दलित 'पवार' मराठा जाति का नाम क्यों अपनाता है। दलितों की इन मानसिकता का मनोविज्ञान यह है कि इसप्रकार के लोग 'बड़े–स्वर्णों' के जातिगत नामों को अपनाकर भी ये लोग समाज में एकदम अलग–अलग ही पड़े रहे है। पवार और नमिता एक–दूसरे के निकट आते है। नमिता का मोह–भग तब

होता है जब उसे पता लगता है कि पवार उसके साथ विवाह भी एक राजनीतिक लाभ के लिए करना चाहता है। उसका मानना है कि जीवन साथी के रूप में ब्राह्मण और दलित का गठबंधन सुंदर और बुद्विमान संतानही नहीं देगा, बल्कि राजनीति में भी फलदायी सिद्व होगा। स्वर्ण और दलित दोनों के वोट झोली में होगें। पवार निमता को केवल वस्तु की तरह देख रहा है।[10]

आंवा उपन्यास में स्त्री–स्वातन्त्रय, समलैगिंकता विवाह, संस्था से मोहभंग समाज में प्रत्येक स्तर और सम्बन्ध का केवल कामवासना सम्बन्ध में परिणत हो जाना, जिसमें हर रूप में केवल स्त्री का यौन–शोषण, पिता और भाई जैसे पवित्र रिश्तों द्वारा भी नारी का बलात्कार आदि अनेक वैश्वीकरण से सम्बन्धित मुद्दों को उठाया गया है। कुंती मौसी का पति किशोरी नमिता का कौमार्य भंग करता है, श्रमिक संगठन के नेता अन्ना साहब नमिता को अतृप्त कामवासना का शिकार बनाते है। वैश्वीकरण के दौर में नारी आज केवल मजाक बनकर रह गई है।[11]

उपभोक्तावादी और बाजारवादी संस्कृति ने प्रत्येक वर्ग की मानसिकता को विकृत कर दिया है। महिलाओं ने आजकल यौन–सुख पूर्ण तृप्ति के लिए नया माध्यम खोज निकाला है– समलैंगिकता। इसमें नीलम्मा का प्रसंग ऐसा ही है जिसके माध्यम से महिलाओं के एक विशेष वर्ग में समलैंगिकता रति की प्रवृति चित्रित है। सहेलियां एक–दूसरे की "कसमे खा–खाकर" यकीन दिलाने की कोशिश करती है कि मालिनी "औरत की देह को औरत ही पहचानती है।[12]

निष्कर्षः– वैश्वीकरण आज जीवन और जगत के सभी क्षेत्राों में घुल–मिल गया है। यह भौतिक अवधारणा है। इसने मनुष्यों के आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों को पूरी तरह बदल दिया है।

हिन्दी का उपन्यासकार इससे अपने युग की परिवर्तन परिस्थितियों से परिचित रहता है और उसका यथार्थ चित्रांकन अपने उपन्यासों में करता है।

महानगरीय सामाजिक मुद्दों को हम (आंवा) उपन्यास में देख सकते हैं।

संदर्भ सूची

[1]. कमलनयन काबरा भूमण्डलीयःविचार, नीतियां और विकल्प, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 2005, पृष्ठ 22–23।
[2]. आजतक, नई दिल्ली 5 दिसम्बर 2018।
[3]. वही
[4]. चित्रा मुदगल, आंवा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 1999, पृष्ठ–539।
[5]. राजेश चहल, मानव अधिकार एवं मुद्दे, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली 2016, पृष्ठ –35।
[6]. उपरोक्त, चित्रा मुदगल/पृष्ठ–539
[7]. वही पृष्ठ–397
[8]. वही पृष्ठ 346–347
[9]. वही, पृष्ठ–357।
[10].वही पृष्ठ–410
[11].वही
[12].कमल नयन काबरा उपरोक्त 'भूमण्डलीयकरण' विचार, नीतियां और विकल्प, पृष्ठ–246।